24-7-67 ओम शान्तिः रात्री क्लास:

सेमीनार के लिये बाबा रोज-2 प्वाईन्टस बताते रहते हैं। बच्चों को ऐसे सर्विस करनी चाहिये, यह करना चाहिये। मित्र सम्बन्धी आद जो कोई भी मिले उनको ही पहले-2 अल्फ की पहचान देनी है। बाबा रोज इस पर समझाते रहते है। दुनियाँ सतोप्रधान थी अब तमोप्रधान बनी है। फिर सतोप्रधान कैसे बनेगी। तुम बनो तो दुनियाँ भी बनेगी। तुम सुधरो तो दुनियाँ भी सुधरेगी। तुम बच्चों मे ही सारी ताकत चाहिये। तुम ही पवित्र बनो तो सारी दुनियाँ पवित्र बन जावेगी। सारे विश्व का मदार तुम बच्चों पर है। शिव बाबा कहते है कि मुझे थोडेई नई दुनियाँ में जाना है। पुरानी चीज को तमोप्रधान नई चीज को सतोप्रधान कहा जाता है। विनाश भी जरूर होना ही है। कलयुग के बाद ही सतयुग आवेगा जिसको ही हेवन कहते है। आसुरी दुनियाँ जरूर विनाश हो जावेगी। अभी तो सारी ही तुम बच्चों को रोशनी मिली है। ज्ञान का तीसरा नेत्र देने वाला भी बाप ही है। उस बाप को ही याद करना है कि सतोप्रधान बन जावें। नां पढने वाले तो साधारन प्रजा ही बन जावेंगे। अच्छी रीती पढने और पढाने वाले ही ऊँच पद पावेंगे। बाकी तो पवित्र जरूर बनना ही है। बाप को याद करना है। भक्ति मार्ग मे कितने धक्के खाते है। सतयुग मे तो भक्ति मार्ग होता है नही है। जब आधा समय पुरा होता है तब भक्ति मार्ग शुरू होता है। शुरू मे सतयुग मे भक्ति किसकी करें? ल-न का ही तो राज्य है नां। फिर भक्ति किसकी कौन करेंगे? इतने ढेर मन्दिर है। सतयुग मे तो एक भी मन्दिर नही होगा। है भी बहुत साधारण सी बात समझने की। बार-2 अपने को आत्मा समझ कर बाप को याद करना है। कर्म करते हुये भी बाप को तो याद कर सकते हो नां। अगर याद नही पड़ता है तो प्रैक्टिस करो। हम बाबा को याद करता हूं फिर मेरे विकर्म विनाश हो जावेंगे। देह सहित सब कुछ भूलना है। याद ही से बेडा पार होगा। पढाई सोर्स आफ इनकम है। यह बहुत साधारण पढाई है। वैल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी कितनी सिम्पल है। तुम्हारे लिये सारी दुनियां का विनाश होना है। तुम को पवित्र राजधानी चाहिये। अनेक बार तुमने राज्य लिया है और गंवाया है। दुनियां नई थी तो भारत ही स्वर्ग था। अब नर्क है। फिर भारतवासी ही स्वर्गवासी बनेंगे। सतोप्रधान बनने लिये तो बाप कहते है कि मामेकम् याद करो। खाना पकाओ तो भी याद करते रहो। श्रीनाथ दवारे मे तो मुह ही बन्द कर लेते है। श्रीनाथ को याद करके भोजन बनाते है। अन्दर मे कहना होता है कि हम यह भोजन उन के लिये बनाते है। तुम्हारा भी अन्दर ही अन्दर मे चलना चाहिये। जगन्नाथ पर तो चावल की हुंडी चढती है। श्रीनाथ पर तो बहुत सारे माल बनते है। अभी तुम बेगर लाईफ मे हो नां। फिर तुम को ही वहां पर दुसरे जन्म मे बहुत माल मिलता है। बाप कहते है कि कृष्ण वाली आत्मा के बहुत जन्मो के भी अन्त के जन्म के शरीर मे मै प्रवेश करता हूं। सीधी सी बात है। बहुत जन्म तो मनुष्य के ही बतावेंगे नां। मै इनमे प्रवेश करता हूं फिर यही वो बनते है। बिलकुल ही इजी सी बात है। तुम भी देवता थे। बहुत जन्म तो उनके ही गिनेंगे जो कि बहुत अच्छी रीती पढते होंगे और भक्ति भी बहुत सारी की होगी। तुम जानते हो कि कृष्ण की आत्मा को पहले-2 सूर्यवंशी फिर चन्द्रवंशी.... अब फिर पहले नम्बर में जावेंगे। तुम को भी उतनी ही खुशी होनी चाहिये। शुरू मे जो नवलाख होंगे तो वो भी तो पुरुषार्थ करके दिखावेंगे ही नां। सिर्फ दैवी गुण धारन करने है और नष्टोमोहा बनना है। समझ की बात है कि हमको घर जाना है। इस पुरानी दुनियां में तो रखा ही क्या है। यहां रहते हुये घर भी मोह ममत्व नही रखो। कोई बिमार है वा शरीर भी छोड दे तो भी दुःख नां होना चाहिये। तुम हो सर्वोतम ब्राह्मण कुल भूषण फिर देवता बन जाते हो। इस समय तुम बच्चों को नालेज है। दुसरा फिर सभी की सेवा भी करते हो। यह जन्म तुम्हारा दुर्लभ गाया जाता है नां जिससे ही फिर तुम देवता बनते हो। विश्व की सेवा से तुम उत्तम से उत्तम बनाते हो। नई दुनियां तो बाप ही बनावेंगे नां। कृष्ण तो देह धारी है उनको भगवान नही कहा जा सकता है। मनुष्य को भगवान नही कहा जा सकता है। गुडनाईट